

शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अध्याय अनिवार्यताएँ

क्षमा और मेल-मिलाप

अध्याय 1: क्षमा के आधार

दूसरों को क्षमा करने में बड़ी आजादी है लेकिन अपने गुस्से के सही होने की भावनाओं को छोड़ने की पहली रुकावट अक्सर उस आजादी को पाने का सबसे कठिन भाग होती है।

“मैं उस महिला से नफरत करती थी और बदला लेना चाहती थी। तीन साल तक मैं ने उससे बदला लेने और उसे नुकसान पहुँचाने की योजना बनाई जहाँ उसे सबसे ज्यादा चोट पहुँचे।”

— बोलिविया में महिला कैदी

शायद आपने अपने साथ हुए एक छोटे गलत व्यवहार को अनुभव किया होगा और दूसरे व्यक्ति द्वारा क्षमा माँगने पर आप आसानी से उसे माफ कर देते हैं। लेकिन जब घाव गहरा होता है: क्या तब भी माफ करना आसान होता है?

क्षमा अपने आप में दूसरे व्यक्ति या परिस्थिति के विरुद्ध रखी गई नकारात्मक, गुस्से, या चोट की भावनाओं को मुक्त करना है। मुक्त करने का अर्थ उसे छोड़ना है। जो सुनने में इतना आसान लगता है वह वास्तविक व्यवहार में सर्वाधिक असंभव प्रतीत होता है।

शायद आपने अपने साथ हुए एक छोटे गलत व्यवहार को अनुभव किया होगा और दूसरे व्यक्ति द्वारा क्षमा माँगने पर आप आसानी से उसे माफ कर देते हैं। लेकिन जब घाव गहरा होता है: क्या तब भी माफ करना आसान होता है? यदि आपके साथ हुए गलत व्यवहार के कारण नकारात्मक और गुस्से की गहरी भावनाएँ उत्पन्न हो तो? यदि घाव एक घोर अन्याय का है तो? तब उसे छोड़ना और माफ करना कितना आसान होता है?

बोलिविया में मारिया (बदला हुआ नाम) नामक एक महिला का सामना ठीक ऐसे ही एक घाव से हुआ। मारिया चार बच्चों की एक माँ है और पड़ोस की कुछ महिलाओं ने उस पर एक ऐसे अपराध का झूठा आरोप लगाया जो उसने नहीं किया था। इसके फलस्वरूप उसे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। कल्पना करें: एक निर्दोष महिला को उसके बच्चों से अलग कर एक ऐसे अपराध के लिए जेल की सजा सुनाई गई जो उसने किया ही नहीं था!

आपको कैसा लगता? गुस्सा? घृणा? बदले की भावना? मारिया को भी यही महसूस हुआ। वह कहती है, “तीन साल तक मैं ने योजना बनाई कि कैसे उससे बदला लूँ, उसका ऐसा नुकसान करूँ कि उसे सबसे ज्यादा चोट पहुँचे।”

क्या उसका गुस्सा सही था? क्या उसका प्रतिशोध सही था? बहुत से लोग कहेंगे, ‘हाँ।’ लेकिन फिर भी वह खुश नहीं थी। गुस्से से भरे विचारों और बदले की योजनाओं के सपनों से उसके मन को वह शान्ति या संतुष्टि नहीं मिल रही थी जिसे वह पाना चाहती थी।

जब जेल में बाइबल अध्ययन का एक मौका मिला तो मारिया परमेश्वर के वचन को समझने लगी। पवित्र आत्मा ने उसके अन्दर कार्य किया और उसने देखा कि किस प्रकार उसे एक ऐसे अनुग्रहकारी और प्रेमी उद्धारकर्ता द्वारा माफ किया गया था जिसने मानवजाति के आज तक के इतिहास में सबसे घोर अन्याय सहा था। इस नजरिए के साथ मारिया अपने गुस्से की भावना को छोड़ने और माफ करने में समर्थ हुई जैसे उसके स्वर्गीय पिता ने उसे माफ किया था।

वह कहती है, “यहाँ की स्त्रियों के साथ किए गए बाइबल अध्ययन और दूसरी पढ़ाईयों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो, अब नफरत और उन महिलाओं से बदला लेने की इच्छा गायब हो गई है। इन अध्ययनों ने भुलाने में मेरी सहायता की। मुझे शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत बेहतर महसूस हुआ। मेरा गुस्सा मुझे शान्ति से नहीं जीने देता। लेकिन इसने मुझे मेरे परिवार और मेरे पुत्र से माफी माँगने में समर्थ बनाया है। छह वर्षों से यहाँ रहना न केवल मेरे लिए बल्कि मेरे पूरे परिवार के लिए भी बहुत पीड़ादायक रहा है।”

मारिया की कहानी सुनकर बहुत से लोग यह कहेंगे कि उसे अपने साथ हुए अन्याय पर क्रोधित होने का पूरा अधिकार था। हालांकि हम समझ सकते हैं कि उसके गुस्से और नफरत का क्या कारण था लेकिन बाइबल में यह स्पष्ट है कि उसकी भावनाएँ स्वीकार्य नहीं हैं और उस अनुग्रह का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं जो उसे दिया गया था। इस नफरत और बदले की भावना के कारण उसके मन में शान्ति नहीं थी। इसलिए उसने क्षमा के कठिन रास्ते को चुना। उसने अपने कारावास में निहित आशीषों को देखने का निर्णय लिया। आश्चर्यजनक रूप से, वह स्वीकार करती है, "यदि मुझे उस महिला से माफी माँगने का मौका मिलता है जिसने मुझे यहाँ भेजा है तो मैं माफी माँगूँगी और कहूँगी, 'मुझे इस जगह भेजने के लिए धन्यवाद।' क्योंकि यहाँ रहकर मैं ने उन बातों की सराहना करना सीख लिया है जिनकी मैं पहले सराहना नहीं करती थी।"

एक व्यक्ति के दिल और दिमाग में बदलाव लाने वाले परमेश्वर के अनुग्रह की कितनी बड़ी गवाही है! एक व्यक्ति के दिल में उण्डेला गया यीशु का प्रेम ही उन कठोर भावनाओं को छोड़ने और मुफ्त में क्षमा करने की क्षमता और इच्छा में इतना बड़ा बदलाव ला सकता है। और केवल माफ करना ही नहीं बल्कि वर्षों तक उनके विरुद्ध रखी नफरत और बदले की भावना के लिए माफी माँगना! यही अनुग्रह है! यही आजादी है! अब किसी भी कारावास के सीखंचे उसे जकड़ नहीं सकते। पवित्र आत्मा की इच्छा और प्रेरणा के प्रति समर्पण के कारण अब उसकी आत्मा आजादी और शान्ति से जी रही है।

इसमें कोई शक नहीं कि यह एक कठिन प्रक्रिया है। जब आप अपने साथ हुए अन्यायों को देखते हैं तो निश्चित रूप से आप अपने जीवन के उन क्षेत्रों को देख सकते हैं जिनमें आप किसी व्यक्ति या परिस्थिति के विरुद्ध अपने मन में गुस्सा या कड़वाहट रखे हुए हैं। क्या उस गुस्से या क्षमाहीनता की भावना से आपको खुशी और आजादी का अहसास होता है? चाहे आपका गुस्सा कितना भी सही लगता हो लेकिन क्या आपको वास्तव में यह विश्वास है कि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है?

इफिसियों 1:7-8 हमें बताता है कि यीशु ने अपने स्वयं के लहू और बलिदान की सामर्थ के द्वारा हमें छुड़ाया और क्षमा किया है। यह अनुग्रह हम पर उण्डेला गया है। क्या हमारे प्रति परमेश्वर का गुस्सा सही नहीं था? क्या हमने इतने तरीकों से उसके विरुद्ध पाप नहीं किया था कि हम पर उसका गुस्सा निकालना पूरी तरह से सही होता? फिर भी, अपनी बड़ी करुणा में अपने पुत्र के द्वारा वह हमें क्षमा करता है। यह क्षमा छोटी नहीं है। यह उदार अनुग्रह और क्षमा है जो हर समय के हमारे सारे पापों के लिए हमारी ओर उमड़ रहा है। तो फिर हम अपनी घृणा और गुस्से को छोड़कर वही अनुग्रह और क्षमा उदारता से उन्हें देने का कठिन काम क्यों नहीं कर सकते हैं जिन्होंने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया है?

क्षमा के आधारों को समझना—कि हमारे कुचलने वाले कर्ज से हमें उदारता से क्षमा किया गया है—दूसरों को क्षमा करने के कठिन कार्य को करने में हमारी सहायता करेगा। नफरत और बदले की भावना को छोड़ने के बाद बड़ा आनन्द और बहुतायत की आजादी मिलेगी। आज प्रभु से कहें कि वह छोटी से छोटी गलती के

आश्चर्यजनक रूप से, वह स्वीकार करती है, "यदि मुझे उस महिला से माफी माँगने का मौका मिलता है जिसने मुझे यहाँ भेजा है तो मैं माफी माँगूँगी और कहूँगी, 'मुझे इस जगह भेजने के लिए धन्यवाद।' क्योंकि यहाँ रहकर मैं ने उन बातों की सराहना करना सीख लिया है जिनकी मैं पहले सराहना नहीं करती थी।"

जब आप अपने साथ हुए अन्यायों को देखते हैं तो निश्चित रूप से आप अपने जीवन के उन क्षेत्रों को देख सकते हैं जिनमें आप किसी व्यक्ति या परिस्थिति के विरुद्ध अपने मन में गुस्सा या कड़वाहट रखे हुए हैं। क्या उस गुस्से या क्षमाहीनता की भावना से आपको खुशी और आजादी का अहसास होता है? चाहे आपका गुस्सा कितना भी सही लगता हो लेकिन क्या आपको वास्तव में यह विश्वास है कि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता है?

बारे में भी आपके दिल में बसी कड़वाहट को प्रकट करे और आपको माफ करने और उससे आजाद करने के लिए उस पर भरोसा रखें।

एक नजर में

- चाहे हमारे विरुद्ध किया गया अन्याय कितना भी बड़ा हो, चाहे हमारा गुस्सा कितना भी जायज लगे, लेकिन क्षमाहीनता से प्रभु खुश नहीं होता है।
- हमारे हमारे स्वर्गीय पिता द्वारा उदारता से क्षमा किया गया है इसलिए हमें उन लोगों को उदारता से क्षमा करना चाहिए जिन्होंने हमारे साथ बुरा व्यवहार किया है।
- क्षमा के द्वारा हमारे दिलों के गुस्से और बदले की भावना को छोड़ने के द्वारा हम हमारे जीवन की पीड़ादायक परिस्थितियों से आजादी पाते हैं और उसमें आनन्द का अनुभव करते हैं।

आपका विचार

- सावधानी और ईमानदारी से सोचें: क्या आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जिन्हें आपने दिल से माफ नहीं किया है? क्या आपके जीवन में कोई ऐसी परिस्थिति या व्यक्ति है जिसके कारण आप गुस्से, बदले, और कड़वाहट के बोझ को महसूस करते हैं? प्रभु से कहें कि वह उसे आप पर प्रकट करे और फिर इस कड़वाहट को दिल में रखने के लिए नम्रता से अंगीकार करते हुए प्रभु से क्षमा माँगें। यदि यह उचित या संभव हो तो उस व्यक्ति से सम्पर्क करें जिसे आपने क्षमा नहीं किया है और उसे क्षमा करें।
- उन पापों पर विचार करें जिन्हें क्षमा करने के लिए आप परमेश्वर के सबसे ज्यादा आभारी हैं! उन्हें लिखें और बड़ी क्षमा के लिए प्रार्थना में परमेश्वर को धन्यवाद दें।
- मत्ती 18:21-35 पढ़ें। आप क्षमा के महत्व के बारे में क्या सीखते हैं? आप एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए क्या कदम उठा सकते हैं जो क्षमा करता है क्योंकि परमेश्वर ने आपको क्षमा कर दिया है?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें:

www.discipleshipessentials.org/licensing